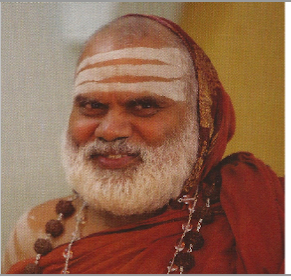

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

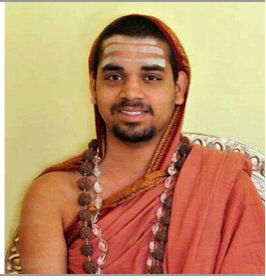

अनुग्रह भाषण

हमेशा अच्छे कामों में लगे रहें

मनुष्य के लिए जीवन में हमेशा अच्छी चीजों की आकांक्षा करना स्वाभाविक और उचित है। यह इस आकांक्षा के कारण है कि वह कई गतिविधियों में संलग्न रहता है और उनके फलों का आनंद लेता रहता है, जन्म के बाद जन्म (जब तक वह ज्ञान या परम सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता) हालाँकि, आजकल कुछ लोगों को संदेह हैः "हम कई अच्छे काम कर रहे हैं। क्या वे फल देंगे? "

शास्त्रों में कहा गया है कि सभी कार्य निश्चित रूप से परिणाम देंगे। उदाहरण के लिए, अच्छे कर्मों के अच्छे परिणाम मिलेंगे और बुरे कर्मों के बुरे परिणाम आएंगे। इस मामले में कोई संदेह नहीं है। जगद्गुरु शंकराचार्य 13-15 मई, 2012 को विजय यात्रा में राजापलायम में परम पूज्य / पावन महासन्निधानम श्री श्री भारत तीर्थ स्वामीजी।

मनुष्य के हित में ही शास्त्रों का मत है, "केवल अच्छे कर्म करते रहें; आप न केवल इस दुनिया में, बल्कि भविष्य में भी अच्छे परिणामों का आनंद लेंगे।"

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति ॥

यह श्लोक इस तथ्य को संदर्भित करता है कि भले ही एक बछड़ा एक हजार गायों के बीच घूम रहा हो, उसे अपनी माँ मिल जाएगी। इसी तरह, मनुष्य का कर्म भी उसका अनुसरण करेगा और परिणाम देगा। इसलिए, किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि क्या सभी अच्छे कर्म बेकार हो जाएंगे और क्या बुरे कर्म का प्रभाव पड़ेगा। वास्तव में, पुण्य कर्म (अच्छी गतिविधियाँ) तेजी से परिणाम देते हैं।

कुशलान्याशु सिद्ध्यन्ति नेतराणि कृतानि यत् ।

दूसरी ओर, बुरा कर्म बुरा परिणाम देता है और अंततः कर्ता को नष्ट कर देता है।

हम सभी को इसे अच्छी तरह से समझने और अच्छे कार्यों में संलग्न रहने का आशीर्वाद देते हैं।

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

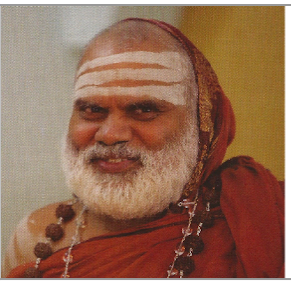

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

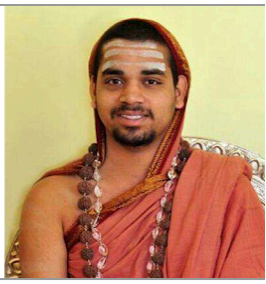

||आत्मबोध:||

||ātmabodha:||

पञ्चप्राणमनोबुद्धि दशेन्द्रियसमन्वितम् ।
अपञ्चीकृतभूतोत्थं सूक्ष्माङ्गं भोगसाधनम् ॥ १३ ॥

पाँच प्राण, दस अंग और मन और बुद्धि, उनके "पाँच गुना विभाजन और एक दूसरे के साथ आपसी संयोजन" (पंचेकरण) से पहले प्राथमिक तत्वों (तन्मात्रा) से बने थे और यह सूक्ष्म शरीर है, व्यक्ति के अनुभव के उपकरण।

(जगद्गुरुः शङ्कराचार्यः परमपवित्रः श्री श्री सन्निधानम् श्री श्री विधुशेखर भारत महास्वामीजी शिवगङ्गै मे 15-16,2017, विजययात्रा)) इति।

(Jagadguru Śankarācārya His Holiness Śrī Sannidhanam Śrī Srī Vidhushekhara Bhāratī Mahāswāmiji at Sivagangai May 15-16 , 2017, Vijaya Yatra)

अनाद्यविद्यानिर्वाच्या कारणोपाधिरुच्यते ।
उपाधित्रितयादन्य मात्मानमवधारयेत् ॥ १४ ॥

अविद्या जो अवर्णनीय और आरम्भहीन है, वह कारण शरीर है। निश्चित रूप से जान लें कि आत्मा इन तीन अनुकूलन निकायों (उपादियों) के अलावा अन्य है।

पञ्चकोशादियोगेन तत्तन्मय इव स्थितः |
शुद्धात्मा नीलवस्त्रादि- योगेन स्फटिको यथा ॥ १५ ॥

पाँच आवरणों के साथ अपनी पहचान में ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यंत स्वच्छ (अप्रभावित) आत्मा ने अपने गुणों को अपने ऊपर उधार लिया है; जैसे कि एक क्रिस्टल के मामले में जो अपने आस-पास के रंग (नीला कपड़ा, आदि) को इकट्ठा करता प्रतीत होता है।)

(जारी रहेगा...)

धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

नमस्कार स्वामीजी, कहा जाता है कि हमें रोजाना 'पंचायतना पूजा' करनी चाहिए? ऐसे में कई घरों में हम ऐसा नहीं देख पा रहे हैं। यदि ऐसा है तो क्या कोई व्यक्ति नई शुरुआत कर सकता है? इसके लिए क्या प्रक्रिया है?

मेरी समझ के अनुसार, पंचायतना पूजा अग्निहोत्री कर्मों का प्रतिस्थापन है। इसलिए, पंचायत पूजा को स्वयं देव यज्ञ के हिस्से के रूप में शामिल किया जा सकता है। अगर देव यज्ञ के हिस्से के रूप में किया जाता है, तो पंचायत पूजा अच्छी होती है। कोई नई शुरुआत कर सकता है। पंचायत पूजा पर कई किताबें हैं। श्रीवत्स सोमदेव सरमा द्वारा प्रकाशित पुस्तक का उल्लेख किया जा सकता है।

.. हमारा अगला संदेह है, कहा जाता है कि महाभारत को पांचवां वेद माना जाता है। लेकिन कई जगहों पर परिवार के कई बुजुर्ग कह रहे हैं कि हमें अपने घर में महाभारत नहीं पढ़ना चाहिए। फिर हम इसे कैसे सीख सकते हैं। कृपया हमारी शंका को दूर करें।

यह एक मिथक है कि किसी को भी घर पर महाभारत नहीं पढ़ना चाहिए। यह अंधविश्वासी विचार हमारी सोच में आ गया है। महाभारत को किसी भी तरह से घर पर पढ़ा जा सकता है। शास्त्रों में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है कि किसी को घर पर महाभारत नहीं पढ़ना चाहिए। वे अवांछित भावनाएँ पैदा कर रहे हैं।

दो महत्वपूर्ण ग्रंथ-श्रीमद भगवद गीता और श्री विष्णु सहस्रनाम महाभारत का हिस्सा हैं। महाभारत पढ़ने से हमारे घरों में शुभता आएगी। श्लोकों का अर्थ सीखकर, व्यक्ति मनुष्य द्वारा की गई गलतियों के बारे में और गलतियों से बचने और खुद को परिष्कृत करने के तरीके के बारे में समझ सकता है। इस प्रकार, महाभारत को पढ़ने से ज्ञान में स्पष्टता प्राप्त होगी।

3. कहा जाता है कि महिलाओं को "गायत्री जप" का जाप करने का अधिकार नहीं है। ऐसे में उन्हें "गायत्री मंत्र का जाप" करने के स्थान पर प्रतिदिन जप करने का क्या सुझाव दिया जाता है।

वैदिक मंत्रों को फायदेमंद कहा जाता है-केवल तभी जब उचित संस्कारों के साथ जप किया जाए। वैदिक मंत्र हथियारों की तरह हैं-उनका दुरुपयोग या दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए। महात्माओं ने करुणा के साथ एक श्लोक दिया है, जिसका अर्थ गायत्री मंत्र के समान है।

यो देव: सवितास्माकं धियो धर्मादिगोचरा:
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्ग: तद्वरेण्यमुपास्महे
yō dēvaḥ savitāsmākaṁ dhiyō dharmādigōcarāḥ
prērayēt tasya yadbhargaḥ tadvarēṇyamupāsmahē
इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है-हम अपनी बुद्धि को सही दिशा में प्रज्वलित करने के लिए प्रफुल्लित सूर्य भगवान से प्रार्थना करें।

(जारी रहेगा..)

पूजा विधान

व्रतों का पालन करने की प्रक्रियाः -

सुबह जल्दी उठना चाहिए और अपने आश्रम के लिए धर्म में बताए अनुसार अपने नियमित कर्तव्यों को बिना किसी असफलता के करना चाहिए। संध्यावंदनम, ब्रह्म यज्ञ आदि करने के बाद व्यक्ति को किस उद्देश्य या किस व्रत के लिए संकल्प (शपथ) लेना चाहिए। सङ्कल्प करने के बाद उसे व्रत रखने की सर्वोत्तम विधि में बिना सोए दिन भर उपवास/उपवास करना चाहिए। यदि पूरे दिन उपवास रखना संभव नहीं है, तो संध्या पूजा समाप्त करने के बाद कुछ हल्का सेवन किया जा सकता है।

प्रत्येक व्रत में प्रत्येक मुख्य देवता होता है। उन देवताओं की पूजा विशिष्ट व्रत के दिनों में या तो मूर्तियों में या मूर्तियों पर करनी होती है। हमें प्रोहित/वाडियार को अच्छी दक्षिणा और भोजन देकर उचित तरीके से सम्मानित करना होगा। व्रत रखने में यह मुख्य खंड है।

महिलाओं को अपने पति से उचित पुष्टि और अनुमति प्राप्त करने के बाद कोई भी व्रत रखना चाहिए। तभी उसे व्रत से लाभ होगा। अन्यथा यह बेकार और पाप है। इस प्रकार कई स्मृतियाँ कहती हैं।

कुछ महत्वपूर्ण बिंदुः

आम तौर पर पूजा में हमारे चार खंड होते हैं। 1) पूर्वांग पूजा; 2) प्रधान पूजा; 2) उत्तरांग पूजा और 4) पुनहा पूजा।

1. पूर्वांग पूजाः

इस खंड में 9 भाग हैं। वे हैं-1) आसन पूजा, 2) गंडा पूजा, 3) विघ्नेश्वर पूजा, 4) कलश पूजा, 5) संघ पूजा, 6) आत्म पूजा, 7) पीठ पूजा, 8) गुरु ध्यान और प्राण प्रथम।

यह पूर्वांग पूजा सभी प्रकार के देवताओं की पूजा के लिए समान होगी। यह पूर्वांग पूजा करने के बाद ही हम मुख्य पूजा कर सकते हैं।

2. प्रधान पूजाः

गणेश पूजा, सरस्वती पूजा, शिवरात्रि पूजा आदि पूजा की इन श्रेणियों में आती हैं। इस पूजा में हम संकल्प, ध्यान, आवाहन, पथ्यम, अर्कम, आचमनियम, मधूपक्कम, पंजमरुथ स्नानम, सुधोन्न स्नानम, वस्त्रम, उपवीथम, गंथम, अक्षद, पुष्पम, अंग पूजा और अष्टोतरा पूजा करेंगे। इस अनुक्रम में हम इसमें कुछ पहलुओं को ऊपर और नीचे करेंगे।

3. उत्तरांग पूजाः

पूजा के इस खंड में धूप, दीपम, निवेधया, तंबूला, नीरजना, मंत्र पुष्प, कात्रसम्रति राजोपाचार, प्रदक्षिणा नमस्कर, प्रदाना, अर्क्या प्रधान, उपयानधन होंगे। जैसा कि उपरोक्त कुछ और प्रत्येक परंपराओं में ऊपर और नीचे होंगे।

4) पुनहा पूजाः

उसी दिन या अगले दिन बहुत छोटे अनुष्ठानों के साथ और निवेदना और अर्कपथ्य के साथ हम "यथ स्थानम प्रथिस्तपायमी" कहेंगे और उद्यापना करेंगे।

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/voj/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringerī
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand Smt B Srimathi Veeramani	Web Director Web Asst Director & Chief Editor	Coimbatore Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram